संस्कृत व्याकरण

प्रस्तुति

डा. स्मिता कुमारी

सह-प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,

संस्कृत-विभाग,

पटना वीमेंस कालेज, पटना

परिभाषा और महत्व

- व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेन इति- शब्दज्ञानजनकं व्याकरणम्।
- संस्कृत भाषा को शुद्ध रुप में जानने के लिए व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया जाता है। अत: इसे शब्दानुशासन भी कहते हैं।
- इसी विशेषता के कारण इसे वेदों का सर्वप्रमुख अंग माना गया है।
- सर्वप्रथम ब्रह्मा ने बृहस्पति को फिर बृहस्पति ने इन्द्र को व्याकरण का प्रतिपद शब्दबोध कराया।
- वैदिक काल में प्रातिशाख्यों के रुप में व्याकरण का आविर्भाव हुआ।

व्याकरण का आधार ग्रन्थ: अष्टाध्यायी

- महर्षि पाणिनी विरचित अष्टाध्यायी सम्प्रति उपलब्ध व्याकरण ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- महर्षि पाणिनी ने अष्टाध्यायी के द्वारा संस्कृत भाषा को एक ठोस स्वरुप प्रदान किया।
- यह ग्रन्थ अपनी वैज्ञानिकता और संक्षिप्तता के लिए विख्यात है।
- अष्टाध्यायी आठ अध्यायों में निबद्ध है। प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। कुल 3976 सूत्र हैं।
- अष्टाध्यायी का माहेश्वर सूत्र संस्कृत व्याकरण की आधारशिला है।
- अष्टाध्यायी के सूत्रों को लेकर भट्टोदीक्षित ने प्रक्रिया की दृष्टि से सिद्धान्तकौमुदी की तथा उनके शिष्य वरदराज ने लघु सिद्धान्तकौमुदी की रचना की।

Ekkgs'oj lw=

- माहेश्वर सूत्र चौदह हैं –
- अइउण्
- ऋलृक्
- एओङ्
- एऔच्
- हयवरट्
- लण्
- ञमङ.णनम्
- झभञ्
- घढधष्
- जबगडदश्
- खफछठथचटतव्
- कपय्
- शषसर्
- हल्

Ekkgs'oj lw= dh mi;ksfxrk

- ;s Ekkgs'oj lw= v.k~ vkfn izR;kgkjksa dh flf्द्धि के लिए उपयोगी हैं।
- ये प्रत्याहार व्याकरण शास्त्र में लाघव की दृष्टि से निर्मित किए जाते हैं।
- इनका निर्माण अनुबन्धों को जोड़कर तथा वर्णों के प्रचलित क्रम को परिवर्तित रुप में प्रस्तुत कर के किया जाता है।

Aṣṭādhyāyī of Pāṇini
Śiva-sūtrāṇi

	शिवसूत्राणि	प्रत्याहाराः
1.	अ इ उ ण्[1]	अण्
2.	ऋ ऌ क्	अक् इक्
3.	ए ओ ङ्	एङ्
4.	ऐ औ च्	अच् इच् एच् ऐच्
5.	ह य व र ट्	अट्
6.	ल ण्[2]	यण् अण् इण्
7.	ञ म ङ ण न म्	ञम् अम्
8.	झ भ ञ्	यञ्
9.	घ ढ ध ष्	झष् भष्
10.	ज ब ग ड द श्	अश् हश् झश् जश्
11.	ख फ छ ठ थ च ट त व्	चव् छव्
12	क प य्	यय् झय् खय्
13	श ष स र्	शर् यर् झर् खर्
14.	ह ल्	अल् हल् झल्

पद की परिभाषा

- सुप्तिङन्तं पदम्।
- सुबन्तं तिङन्तं च पदसंज्ञं स्यात्।
- सुप् के अन्तर्गत सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय होते हैं।
- तिङ के अन्तर्गत तिप् तस् झि आदि 18 प्रत्यय हैं।

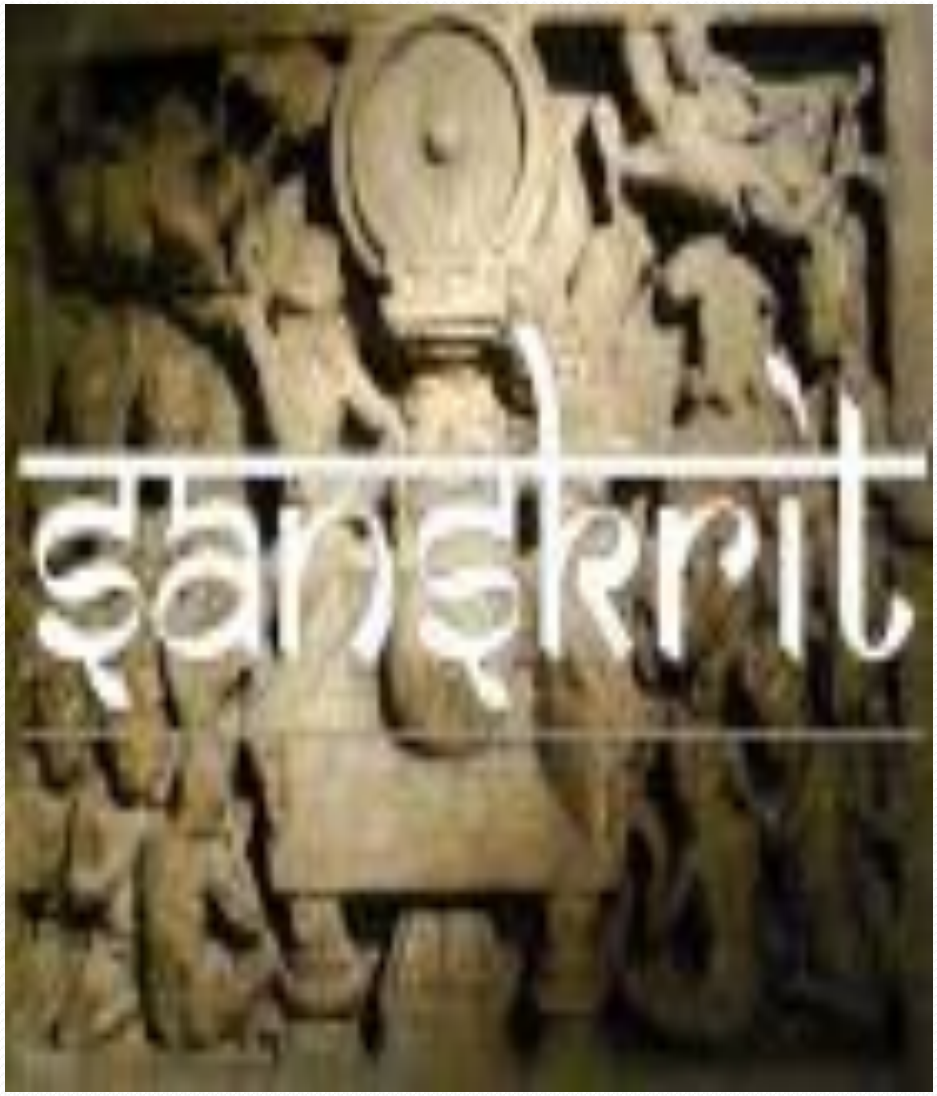

सुप् प्रत्यय

- 1. सु , औ , जस्।
  2. अम् , औट् , शस्।
  3. टा , भ्याम् , भिस्।
  4. ङे , भ्याम् , भ्यस्।
  5. ङसि , भ्याम् , भ्यस्।
  6. ङस् , ओस् , आम्।
  7. ङि , ओस् , सुप्।

  सूत्र:-
  स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यसङसिभ्याम्भ्यस्ङसोयाम्ङ्योस्सुप् अष्टाध्यायी 4.1.2

सुप् का प्रयोग

Case name	Case number	Singular	Dual	Plural
Nominative (कर्ता *kartā*)	1	-स् -s (-म् -m)	-औ -au (-ई -ī)	-अस् -as (-इ -i)
Accusative (कर्म *karma*)	2	-अम् -am (-म् -m)	-औ -au (-ई -ī)	-अस् -as (-इ -i)
Instrumental (करण *karaṇa*)	3	-आ -ā	-भ्याम् -bhyām	-भिस् –bhis
Dative (सम्प्रदान *sampradāna*)	4	-ए -e	-भ्याम् -bhyām	-भ्यस् –bhyas
Ablative (अपादान *apādāna*)	5	-अस् -as	-भ्याम् -bhyām	-भ्यस् –bhyas
Genitive (सम्बन्ध *sambandha*)	6	-अस् -as	-ओस् -os	-आम् –ām
Locative (अधिकरण *adhikaraṇa*)	7	-इ -i	-ओस् -os	-सु –su
Vocative (सम्बोधन *sambodhana*)		-स् -s (- -)	-औ -au (-ई -ī)	-अस् -as (-इ -i)

तिङ का प्रयोग

Table A	एक वचनम्	द्वि वचनम्	बहु वचनम्
उत्तम पुरुष	अहम्	आवाम्	वयम्
मध्यम पुरुष	त्वम्	युवाम्	यूयम्
प्रथम पुरुष	राम:	रामौ	रामा:

Table B	एक वचनम्	द्वि वचनम्	बहु वचनम्
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति

निष्कर्ष

- संस्कृत वाक्यों में सुप् और तिङ् प्रत्ययों से युक्त 'पदों' का ही प्रयोग किया जाता है। कहा भी गया है– 'अपदं न प्रयुञ्जीत।'
- संस्कृत एक संश्लिष्ट भाषा है।
- भाषा में शुद्धता और शब्दों की सिद्धि के लिए व्याकरण का ज्ञान अनिवार्य है।
- संस्कृत व्याकरण की आधारशिला अत्यंत वैज्ञानिक है।
- वैदिक मंत्रों के सम्यक् ज्ञान के लिए षड् वेदांगों– शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण एवं छन्द की हुई थी।
- षड् वेदांगों में व्याकरण सबसे प्रधान है। इसे वेद रूप पुरुष का मुख कहा गया है।

धन्यवाद!

निष्कर्ष

- संस्कृत वाक्यों में सुप् और तिङ् प्रत्ययों से युक्त 'पदों' का ही प्रयोग किया जाता है। कहा भी गया है– 'अपदं न प्रयुञ्जीत।'
- संस्कृत एक संश्लिष्ट भाषा है।
- भाषा में शुद्धता और शब्दों की सिद्धि के लिए व्याकरण का ज्ञान अनिवार्य है।
- संस्कृत व्याकरण की आधारशिला अत्यंत वैज्ञानिक है।
- वैदिक मंत्रों के सम्यक् ज्ञान के लिए षड् वेदांगों– शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण एवं छन्द की हुई थी।
- षड् वेदांगों में व्याकरण सबसे प्रधान है। इसे वेद रूप पुरुष का मुख कहा गया है।